# 2

# अभिज्ञानशाकुन्तलम्नाटक में आयुर्वेदिक सन्दर्भ

**मंजू पाण्डे**
असिस्टेंट प्रोफेसर
संस्कृत-विभाग राजकीय महाविद्यालय
चिन्यालीसौड़, उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड)।
manjupandey374@gmail.com

**सारांश-** कवि न केवल साहित्यशास्त्र का मर्मज्ञ होता है अपितु विविध शास्त्रों से परिचित होता है क्योंकि कवित्व की प्राप्ति के लिए हेतु ही निर्धारित किया गया है कि कवि लोकप्रचलित शास्त्रों से परिचय रखे तभी निपुणता को प्राप्त कर सकता है। महाकवि कालिदास ने अपने ग्रन्थों में विभिन्न आयुर्वेदिक वनस्पतियों का जिक्र किया है इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि का औषधशास्त्र से कुछ न कुछ परिचय रहा ही होगा, यदि अभिज्ञानशाकुन्तल नामक नाटक की बात करें तो यह नाटक अपने वैशिष्ठ्य के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध है, इस नाटक में भारतीय संस्कृति की अद्भुत छवि देखने को मिलती है। महाकवि के द्वारा प्रकृति का सुंदर वर्णन किया गया है तथा विभिन्न प्रसंगों पर लगभग 25 वनस्पतियों का नाम प्राप्त होता है यदि आयुर्वेद शास्त्र में देखें तो इनमें से प्रत्येक वनस्पति का आयुर्वेदिक महत्त्व देखने को मिलता है। इस लेख के माध्यम से महाकवि के इसी पक्ष पर सहृदय वर्ग का ध्यान आकर्षित करने हेतु तथा भविष्य में शोध कार्य की एक नई दिशा के प्रति चिन्तन के विकास हेतु महाकवि के आयुर्वेदिक ज्ञान पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक में प्राप्त 7 वृक्षों के आयुर्वेदिक महत्त्व को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

**मुख्य शब्द-** आयुर्वेद,साहित्य, ज्योतिष, केतकि, कुमुदिनी, इंगुदी, आम्र, पीपल, केसर, अपराजिता, निघण्टु, भावप्रकाश।

**प्रस्तावना - शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्। काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे 1।**

काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट की यह उक्ति - शक्ति: कवित्वबीजरूप संस्कारविशेष:(कवि में रहने वाली उसकी स्वाभाविक प्रतिभा),निपुणता

1काव्यप्रकाश1.3


©Indira Gandhi National Open University

लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् लोक अर्थात् स्थावर जंगमरूप सांसारिक व्यवहार के शास्त्र छंद व्याकरण संज्ञा शद्बों के कोश,कला(चौंसठ कलाएं),चतुवर्ग या (धर्म, अर्थ, काम,मोक्ष )के ग्रंथ, हाथी,घोड़े एवं खड्ग आदि के लक्षण ग्रंथों और महाकविसंबंधी काव्यों के आदि पद के ग्रहण व इतिहास आदि के पर्यालोचन से उत्पन्न व्युत्पत्ति (विशेष प्रकार का ज्ञान), काव्य को जानने वाले गुरु की शिक्षा के अनुसार अभ्यास।[2] कवीकुलगुरुकालिदास जी की साहित्य संपदा को देखते ही चरितार्थ होने लगती है क्योंकि आचार्य मम्मट के अनुसार किसी भी व्यक्ति कवि को बनने के लिए तथा काव्य की उत्पत्ति के लिए उपरोक्त तीन हेतुओं का होना आवश्यक है। महाकवि कालिदास जी की साहित्य संपदा पर यदि गौर किया जाए तो उनमें द्वितीय हेतु के रूप में प्रतिपादित

**निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्** का महाकवि ने अपनी काव्य संपदा में प्रचुर प्रयोग किया है, महाकवि की रचनाओं में लोक में प्रचलित समस्त शास्त्रों का ज्ञान देखने को मिलता है जैसे दर्शन, संस्कृति, राजनीति, ज्योतिष, भूगोल व आयुर्वेद आदि। यदि कवि के ग्रंथों में आयुर्वेद तत्व का अन्वेषण करें तो महसूस होता है कि महाकवि कालिदास भले ही एक आयुर्वेदिक चिकित्सक के रूप में प्रतिष्ठित न हों पर आयुर्वेद से उनका परिचय अवश्य ही प्रतीत होता है, महाकवि ने अपने कुमारसंभव महाकाव्य के प्रथम सर्ग के द्वितीय श्लोक में ही औषधि शद्ब का प्रयोग किया है तथा कई स्थानों पर हिमालय की कन्दराओं में दीपक के समान चमकती हुई औषधियाँ जैसे पद्य प्राप्त होते हैं।

> **यं सर्वशैलाः परिकल्प्य वत्सं मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे। भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्री ॥[3]**

**प्रमुख वनस्पतियों का आयुर्वेदिक महत्त्व इस प्रकार है –**

**1 केतकि** - महाकवि कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तल, रघुवंश, कुमारसंभाव व मालविकागनिमित्र आदि रचनाओं में केतकी या केवड़ा का प्रयोग मिलता है।

> **मुरलामारुतोद्धूतमगमत्कैतकं रजः ।[4]**

पुष्पों के सौन्दर्य व सुरभि के कारण केतकी कवियों को अत्यधिक प्रिय रहा है। इसके पुष्प की सुगन्धि दूर- दूर तक फैल जाती है। प्राचीन समय में यह वनों में स्वयं उगा हुआ भी मिलता था।समृद्ध जनों की वाटिकाओं में इसको शौक से लगाया जाता था। वाटिकाओं के चारों ओर इसे परिवृति (बाढ) के रूप में भी लगाया जाता था। केतकी के पनपने के लिये जल की अधिक आवश्यकता होती है। अत:

---

2काव्यप्रकाश, विश्वेश्वर पाण्डेय, पृ 17

3कुमारसंभवम्, कालिदास 1.2

4रघुवंशम्, कालिदास 4.55


Volume 5, Issue 1, 2026, p14-23 , ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

नदियों के जलीय तटों पर यह स्वाभाविक रूप से अधिक होता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार केतकी को शिव के पूजन के अयोग्य निर्धारित किया गया थापरन्तु इससे पार्वती का पूजन किया जा सकता था।

केतकी पुष्प वर्षा के प्रारम्भ में खिलता है। शरद् के आगमन पर यह मुरझाने लगता है। शरद् ऋतु की धूप से पत्तों के अन्दर के कोमल भाग भी मुरझाने लगते हैं वसन्त ऋतु में केतकी के पुष्प विकसित नहीं होते। केतकी के पुष्पों का मध्य भागऔर पराग श्वेत होते हैं। पराग के बिखरने पर ऐसा लगता है कि मानों चाँदनी छिटक गई हो। पुष्पों की गन्ध तीव्र और मादक होती है। इस पर खूब भौंरे आते हैं। केतकी के पुष्प पर भौंरों को बैठा देखकर श्रीहर्ष ने कल्पना की थी कि वे शिव द्वारा तिरस्कृत किये जाने के कलंकरूप हैं।

**संस्कृत नाम –** केतक, सूचिकापुष्प, जंबुक, क्रकचच्छद।[5]

**हिन्दी नाम –** केवड़ा।

**आयुर्वेदिक उपयोग –** मोटापे, हैपरलीमिटेडेमिया जैसे लिपिड चयापचय में गड़बड़ी के उपचार में उपयोग किया जाता है। ऐसा माना जाता है की इससे गर्भाशय की माँसपेशियों में संकुचन होता है। इसलिए इसका उपयोग अनियमित मासिक धर्म और प्रसव के दौरान भी उपयोग में लाया जाता है।[6]

**रासायनिक संरचना –** कंद में बड़ी मात्रा में स्टार्च होता है।

**2 कुमुदिनी-**

**विभिन्न भाषाओं के नाम-**

**हिन्दी -** कुमुद, कुई, नीलोफर ताला की अनार।

**संस्कृत-**कुमुद, कुमुदनी, चन्द्रेचेष्टा, कुवलय, कैरव।

**मराठी-** कमोद।

**गुजराती-** पोयणु, नालोपल।

**बंगला-** कुमुद, शालूक, हलाफूल, संधि।

**अंग्रेजी-**वाटर लिली (Water Lily)।

**लेटिन-**निफिया लोटस (Nymphea Lotus)।

**गुण-धर्म व प्रयोग-**

शीतल, मधुर विपाक में कटु है। पित्त विकार, रक्तदोष, श्रम, कफ, कास, तृषा, वमन आदि नाशक है। इसका कन्द मधुर, गुरु, पित्तनाशक, मॉसवर्द्धक, रक्तप्रदर-नाशक, तृप्तिकारक तथा गर्भस्थापक है। इसके बीज वातकारक, रक्तपित्त एवं

5भावप्रकाश, आचार्य भावमिश्र,पुष्प वर्ग

6डाबर आरोग्य : आयुर्वेदीय औषधीय पौंधे,पृ.सं 125


©Indira Gandhi National Open University

अतिसारनाशक हैं। बीजों को या बीजों के लावा को दूध में डाल मिश्री मिला कर बना हुई कॉजी या पेय के रूप में पीना शीतल, पौष्टिक, रक्तपित्त, प्रदर तथा दशय की विकृति में हितकर है।[7]

**3 इंगुदी (हिंगोट) – अन्य क्षेत्रीय नाम – हिंगोट, इंगुजा और दीर्घकांटा।**
**पर्यायवाची –** इंगुदोंगारवृक्षश्च तिक्तकस्तापस द्रुमः , इंगुद, अंगारवृक्ष, तिक्तक, तापसमद्रुम आदि।
**वानस्पतिक नाम –** बैलेनाइट्स इजीप्टीयाका।

अभिज्ञानशाकुंतल में इंगुदी के तेल का प्रयोग तपस्वियों के भोजन और शिर में लगाने के लिए किया गया है जब मृगशिशु का मुंह कुश घास से कट जाता है तो घाव को पूरा करने के लिए भी इंगुदी का तेल प्रयुक्त किया गया है, इसका अभिप्राय है कि इसके फल में औषधीय गुणों की प्रचुरता है। तपस्वियों से संबंध रखने के कारण इसे **तपासवृक्ष** कहा गया है।
**यस्य त्वया व्रणविरोपणमिंगुदीनां तैलं न्यशिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।**[8]
**चरकसंहिता के अनुसार – ऐनगुदं तिक्तमधुरं स्निग्धोष्णं कफ़वातजित**[9]**।**
**इंगुदी का फल –** रस में तिक्त और मधुर, स्निग्ध, उष्णवीर्य, कफ तथा वतविकार नाशक होता है।
इसके तैल का प्रयोग जले हुए हिस्से में, बीज उदारशूल य कास में लाभकारी, कुष्टरोग में भी इसके तैल का प्रयोग किया जाता है। इसकी लकड़ी जलाने के लिए उपयोगी है इसके लिए इसको अंगारवृक्ष कहते हैं। इसका तेल दीपक जलाने के काम भी आता है, यह केशवर्धक और स्वरोगनाशक भी है।

**4 आम्र(सहकार) – हिन्दी नाम–** आम।
अंग्रेजी – मैंगो।
**वानस्पतिक नाम–** मैगनीफेरा इंडिका
आम्र, चूत, सहकार आदि नामों से कालिदास ने अभिज्ञानशकुंतल में कई स्थानों पर प्रयोग किया है
जैसे–**इयं स्वयंवरवधूः सहकारस्य त्वया कृतनामधेयवनज्योत्स्नेति नवमालिका। ।**[10]
**और**
षष्टम् अंक में परभृतिका के द्वारा आम्रमंजरी को वसन्त का जीवन कहा गया है।

---

7वनौषधि विज्ञान, वैद्य दिनेश चन्द्र, पृ.सं.179
8अभिज्ञानशाकुंतलम्, 4.14
9चरकसंहिता, सूत्रस्थान, अन्नपानविधिरध्याय, 139
10अभिज्ञानशाकुंतलम् प्रथम अंक पृ,सं 55


©Indira Gandhi National Open University

**आताम्रहरितपांडुर जीवित सत्यं वसंतमासस्य।।दृष्टोऽसि चूतकोरक ऋतुमङ्गल त्वा प्रसादयामि।।**[11]

**पर्यायवाची – आम्रः प्रोक्तो रसालश्च सहकारोतिसौरभः ।कमाङ्गो मधुदूतश्च माकन्दः पिकवल्लभः ।।**[12]

आम्र को रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामांग,मधुदूत, माकन्द, पिकबल्लभ आदि नामों से जाना जाता है।

आयुर्वेद शास्त्र में आम्रवृक्ष के कई उपयोग बताए गए हैं –

**वातपित्तकरं बालमापूर्णं पित्तवर्धनम्। पक्वमाम्रं जयेद्वायुं मांसशुक्रबलप्रदम्।।**[13]

वात और पित्त को विकृत करता है। तरुण किन्तु अपक्व आम पित्तवर्धक होता है। पका आम पित्तवर्धक, वायुशामक एवं मांस, शुक्र तथा बलप्रद है।

**बृहन्निघंटुरत्नाकर के अनुसार –** आम व जामु की छाल का काढा शहद में मिलाकर सेवन करने से सभी प्रकार की तृषा का नाशक होता है।

**आम्रजम्बूकषायं वा पिवेन्माक्षिकसंयुतम्। छर्दि सर्वा प्रणुदति तृष्णां चैवाकर्षति।।**[14]

भावप्रकाश निघण्टु में स्वतः पक्व व कृत्रिम पक्व आम के गुणों का वर्णन प्राप्त होता है-

**तदेववृक्षसम्पक्वं गुरुवातहरं परम्। मधुराम्लरसं किञ्चिद्द्वेत्पित्प्रकोपनम्।।**

**आम्रं कृत्रिमपक्वञ्च तद्द्वेत्पित्तप्रकोपनम्**[15]**।**

अर्थात् वृक्ष पर स्वतः ही पका हुआ आम का फल वातनाशक व किंचित् पित्त को कुपित करने वाला होता है तथा वृक्ष से कच्चा तोडकर कृत्रिम रूप से पकाया गया आम्र का फल पित्तनाशक व विशेषतः मधुर होता है।

**5 पीपल –**

**हिन्दी नाम –** पीपर, पीपल, भोरे।

**संस्कृत नाम –** अश्वत्थ, पिप्पल, चलपत्र, गजाशन, बोधिद्रुम।

11अभिज्ञानशाकुंतलम्, 6.2

12शालिग्रामनिघंटु,फलादिवर्ग, 1

13चरकसंहिता,अन्नपानविधिरध्याय, 137

14बृहन्निघंटुरत्नाकर

15भावप्रकाशन, एक समालोचनात्मक अध्ययन पृ.सं. 314


©Indira Gandhi National Open University

**भावप्रकाश – बोधिद्रुः पिप्पलोय अलपत्रो गजाशनः। पिप्पठो दुर्जः शीतः पित्तश्लोजित्। गुरुस्तुवरको रूक्षो वर्यो योनिविशोधनः ।।**[16]

**पीपल के संस्कृत नाम – बोधिद्रु, पिप्पल, अश्वत्थ, चक्रपत्र और गजाशन हैं।**

पीपल कषाय रसयुक्त, कठिनता से पचने वाला, शीतल, गुरु,,वर्ण को उत्तम बनाने वाला, योनि का शोधन करने वाला एव वित्त, कफ, व्रण तथा रक्तविकार को दूर करने वाला है ।।

**अंग्रेजी नाम –** सेक्रेड फिग, पीपल ट्री।

चरकसंहिता के अनुसार पीपल का फल कषाय, मधुर और अम्ल रस वाला होता है, वात को बढ़ाने वाला, स्वाद में मधुर और विपाक में अम्ल, पित्त – कफशामक एवं गुरु होते हैं।

**अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षन्यग्रोधनां फलानि च। काषायमधुरम्लानी वातलानि गुरुणि च।**

**श्लेष्मला मधुरा चार्द्रा गुर्वी स्निग्धा च पिप्पली। सा शुष्का कफवातघ्नी कटूष्णा वृष्यसम्मता ।।**[17]

आर्द्र (कच्ची ) पीपल कफकारक, रस में मधुर, गुरु तथा स्निग्ध होती है तथा शुष्क (सूखी ) पीपल कफवातनाशक, कटु रस, उष्णवीर्य और वीर्यवर्धक होती है।।[18]

**6 केसर** -हिन्दी-केसर, केशर। संस्कृत-कुंकुम, घुसृण, रक्त। मराठी-कैस गुजराती-केसर। बंगला-जाफरन, कुकुम। अंग्रेजी-सेफ्रॉन (Saffron),लेटिन-क्रोकस सेटाइवा (Crocus Sativa), क्रोकस सेफ्रान (C. Saffron)।

**गुण-धर्म व प्रयोग-**

लघु तिक्त, कटु, विपाक में कट् एवं उष्णवीर्य है। यह त्रिदोषहर, दीपन, ग्राही, यकृत तथा नाड़ी संस्थान उत्तेजक (अधिक मात्रा में कुछ मादक), मस्तिष्ठ बलप्रद, वेदनास्थापन, हृद्य, रक्तप्रसादक, कुछ मूत्रल, बाजीकरण, गर्भाशय संकोचक चक्षुष्य, प्रसन्नताकारक, स्वेदल, एवं कटुपौष्टिक है। अग्निमांद्य, अजीर्ण, शूल, शोथ, वमन, सिर रोग, विष, यकृद्विकार, हृद्दौर्बल्य, रक्तविकार, ध्वजभंग, रजोरोध, कष्टार्त्तव, कष्टप्रसव, ज्वर, व्रण, आक्षेप, आध्मान, हलीमक, प्रदर, श्वास, आमवात एवं विषनाशक है।[19]

केसर, दुनिया के सबसे महंगे मसालों में से एक है, यह एक सुगंधित फूल का एक छोटा सा-हिस्सा होता है जिसकी सुगंध शहद जैसी होती है। वैज्ञानिक रूप से इसे **क्रोकस सैटिवस** के नाम से जाना जाता है, यह इरिडेसिया कुल से संबंधित होता है।

---

16भावप्रकाश निघण्टु, वटादिवर्ग 3

17चरकसंहिता सूत्रस्थान, अन्नपानविधिरध्यायः 197

18चरकसंहिता सूत्रस्थान, अन्नपानविधिरध्यायः 197

19वनौषधि विज्ञान, वैद्य दिनेश चन्द्र पृ.सं.190


©Indira Gandhi National Open University

यह मनुष्यों द्वारा उगाए जाने वाले सबसे पुराने मसालों में से एक है, यह दुनिया का सबसे महंगा मसाला है, केसर एक सुगंधित फूल का एक छोटा सा हिस्सा है जिसकी गंध शहद के जैसी होती है वैज्ञानिक रूप से इसे क्रोकस सैटिवस के नाम से जाना जाता है, यह इरिडेसिया कुल से संबंधित होता है। यह 1600 से 1700 ईसा पूर्व तक मनुष्य द्वारा उगाए जाने वाले सबसे पुराने मसालों में से एक है। इसे मध्य पूर्व के क्षेत्रों और मध्य एशिया या दक्षिण पश्चिम ग्रीक द्वीपों से उत्पन्न हुआ माना जाता है।

**7 अपराजिता-**

विभिन्न भाषाओं के नाम-

**हिन्दी** - कोयल, अपराजिता। संस्कृत- अपराजिता, विष्णुकान्ता, गौकर्णिका, गिरिकर्णिका। मराठी- कोकर्णि सुपली। **बंगला**- अपराजिता गुजराती- गरणी घोली। अंग्रेजी- मेग्रिन (Megim)। लेटिन- क्लिटोरिया, टरनेशिया (Clitoria Tematia)|

अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक के सप्त अंक में वर्णन प्राप्त होता है कि जब दुष्यन्त मारीच आश्रम में पुत्र भरत से मिलते हैं और उसकी कलाई पर बँधे रक्षासूत्र को उठा लेते हैं और तापसियाँ उन्हें ऐसा करने से रोकती हैं और बताती हैं कि इसे इसके माता पिता के अतिरिक्त कोई नहीं उठा सकता और उठाता है तो यह सर्प बनकर डँस लेता है।[20]

**औषधशास्त्रीय ग्रन्थों में अपराजिता –आयुर्वेद शास्त्र में इसके दो प्रकार बताए गए हैं- श्वेत व नीली।**

वैसे तो गुर्णधर्म की दृष्टि से श्वेत और नीली दोनों कोयल(अपराजिता) प्रायः समान ही हैं। दोनों शीतवीर्य प्रधान तथा दोनों का विपाक भी कटु होता है। दोनों में स्निग्धता है, किन्तु तिक्त और कषाय रस की प्रधानता होने से उनमें लघुता एवं रूक्षता भी देखी जाती है। तथापि नीली की अपेक्षा श्वेत कोयल विशेष गुणदायक और प्रभावशाली होती है।[21]

**निष्कर्ष-** निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि संस्कृतसाहित्य न केवल सहृयाह्लादकारी है अपितु सहृदय वर्ग को विविध शास्त्रों में पारङ्गत भी बनाता है संस्कृत वह सुधानिधि है जिसमें जीवन के प्रत्येक पहलू का ज्ञान निहित है अथवा यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि संस्कृत साहित्य जीवन की हर समस्या का हल निकाल सकता है, संस्कृत कवियों में श्रेष्ठ माने जाने वाले महाकवि कालिदास की बात करें तो उन्होंने अपने काव्य में जीवन के हर क्षेत्र को सम्मिलित किया है चाहे वह पुत्री की विदाई पर एक पिता की संवेदना हो या फिर पत्नी वियोग में

20अभिज्ञानशाकुंतलम् सप्तम् अंक

21वनौषधि विज्ञान वैद्य दिनेश चन्द्र पृ.सं.50


Volume 5, Issue 1, 2026, p14-23 , ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

विलखता एक पति(यक्ष) हो कालिदास का साहित्य, लोकसाहित्य है मनुष्य जीवन का दर्पण है, सहृदय मन की संवेदना है, कालिदास साहित्य के प्रत्येक पद्य में भारतीय कला, संस्कृति सभ्यता व परम्परागत ज्ञान की झलक मिलती है यदि कालिदास साहित्य पर गहनता से विचार किया जाए तो कालिदास न केवल एक उत्तम साहित्यकार दृष्टिगत होते हैं अपितु साहित्य के अतिरिक्त अन्य विविध विषयों के ज्ञाता भी सिद्ध होते हैं।

## संदर्भ सूची –


1.काव्यप्रकाश, मम्मटाचार्य, कृष्णदासअकादमी, वाराणसी,1997
2. काव्यप्रकाश(बालबोधिनी), वामनझलकीकर, भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर, पुणे,1983
3. कुमारसम्भव कालिदास, चौखम्बासुरभारतीप्रकाशन, वाराणसी, 2001
4. रघुवंश, कालिदास, चौखम्बासुरभारतीप्रकाशन, वाराणसी, 2005
5.मालविकाग्निमित्रम्, कालिदास, लक्ष्मीवेङ्कटेशमुद्रणालय, मुम्बई, 1959
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, शारदानिकेतन, वाराणसी (दशम-संस्करण), 2001
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी, 2003
8. संस्कृतवाङ्‌मय का बृहत् इतिहास, बलदेव उपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान,2000
9. शिशुपालवध, महाकविः माघः , चौखम्बासुरभारतीप्रकाशन, वाराणसी, 2000
10. साहित्यदर्पणः (व्याख्या), शेषराज रेग्मी, चौखम्बाविद्याभवन, 1991
12. संस्कृतसाहित्येतिहास, हंसराजअग्रवाल, चौखम्बासुरभारतीप्रकाशन,वाराणसी, 2001
13.अभिज्ञानशाकुन्तलम्,कालिदास, चौखम्बासुरभारतीप्रकाशन, वाराणसी, 2017
14.चरकसंहिता,महर्षि चरक,चौखम्भा ओरियन्टालिया,2016
15.बृहद्निघण्टुरत्नाकर,श्री दत्तराम श्रीकृष्णलाल माथुर,खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई 1999
16 भाप्रकाश(भाववोधिनी व्याख्या),श्री पं0 पुष्पलाल झा, चौखम्बा सीरीज आफिस,1998
17निघंटुरत्नाकर, वैद्य रविदत्त, खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई, 1995
18 शालिग्रामनिघंटु,


## अन्तर्जालीय सन्दर्भ –


1 Pharmeasy.in



©Indira Gandhi National Open University

2. Ayurved wikipidia
3. Archive.org


©Indira Gandhi National Open University